International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709
Received: 04-01-2026, Accepted: 03-02-2026, Published: 18-02-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 49-51

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था अवसर और चुनौतियां

सुश्री अंजलि मणि[1], डॉ0 सुरेखा जायसवाल[2]
[1] शोध छात्रा, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] गृहविज्ञान विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था के लिए अपार संभावनाएं हैं। जैसे– नये बिजनेस मॉडल (मरम्मत पुनर्चक्रण), नवाचार, ब्रांड की प्रतिष्ठा में वृद्धि और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना। लेकिन चुनौतियां भी हैं, जिनमें खराब बुनियादी ढाचा, तकनीकी बाधाएं, उपभोक्ता जागरूकता की कमी, कच्चे माल की लागत और नियामक ढाचे का अभाव शामिल है। जिसके लिए एक व्यवस्थित बदलाव और हितधारकों के बीच सहयोग की आवश्यकता है। अतः भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था विभिन्न अवसरों के साथ कई प्रकार की चुनौतियों को भी उजागर करती है, जिनका अध्ययन ही मेरा शोध है।

मुलशब्दः चक्रीय अर्थव्यवस्था, रिसाइक्लिंग, अपसाइक्लिंग, अपशिष्ट प्रबंधन, स्थिरता, प्रतिस्पर्द्धा, सरकारी नीतियां आदि

प्रस्तावना
भारतीय फैशन उद्योग में परिधान और सहायक उपकरणों के विशाल बाजार और निर्माण क्षेत्र को संदर्भित करता है। इस उद्योग में पारंपरिक हस्तशिल्प से लेकर आधुनिक बड़े पैमाने पर उत्पादन और खुदरा बिक्री शामिल है। भारतीय फैशन उद्योग परंपरा, नवीनता और समय के साथ होने वाले बदलावों की एक रंगीन कहानी की तरह है। भारतीय फैशन ऐतिहासिक रूप से और वर्तमान में भी रचनात्मकता और अनुकूलता का संगम रहा है। हम इतिहास की यात्रा करते हुए समय में पीछे जायेंगे और उस युग के भारतीय फैशन को देखेंगे। हम औपनिवेशिक प्रभावों के साथ–साथ यह भी देखेंगे कि स्थानीय डिजाइनर लोगों के पहनावे को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। भारतीय फैशन उद्योग के सबसे शुरुआती संकेत प्राचीन काल में पाए जाते हैं जब लगभग 322–187 ईसापूर्व के मौर्य साम्राज्य की कला में साड़ी पहनावे के तरीके जैसे प्रमाण देखे जा सकते हैं। भारत जो अपने रेशम और सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है में वस्त्र उद्योग की शुरुआत फैशन उद्योग के अस्तित्व में आने से बहुत पहले हुई थी। मुगल साम्राज्य द्वारा रेशम पर जटिल डिजाइन और प्रिंट तैयार किए जाते थे, जिससे यह विलासितापूर्ण और केवल धनी वर्ग के लिए ही सुलभ माना जाता था।
ब्रिटिश राज के दौरान पश्चिमी देशों में ब्लाउज, पतलून, स्कर्ट भारतीय समाज में आए। स्वतंत्रता के बाद आर्थिक अस्थिरता के कारण फैशन उद्योग तब तक छोटा रहा जब तक की अर्थव्यवस्था स्थिर रहने पर पश्चिमी शैली का प्रचलन नहीं हुआ। बॉलीवुड ने 1950 के दशक में फिल्म सितारों से प्रेरणा लेकर और दिखावटी फिल्मी शैलियों को जनता के सामने पेश करके फैशन को लोकप्रिय संस्कृति में और विकसित किया। 1980 और 1990 के दशक के दौरान भारतीय फैशन का एक महत्वपूर्ण दौर रहा जिसमें अबू जानी, संदीप खोसला, तरूण तिहतानी, और अन्य जैसी कंपनियों ने फैशन डिजाइन को एक पेशे के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया।
विश्व स्तर पर भारतीय फैशन डिजाइनों को बढावा देने के उद्देश्य से 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में फैशन डिजाइन परिषद् की स्थापना के बाद दिल्ली में इंडिया फैशन वीक का आयोजन किया गया था। मनीष अरोरा जैसी महत्वपूर्ण हस्तियों ने भगवान की तस्वीर वाली टी शर्ट या किट्स का चलन शुरू किया जबकि मोनिशा जयसिंह ने कुर्ती को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। भारतीय फैशन उद्योग ने व्यावसायिक रूझान के कुछ प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान दिया–

- बाजार का आकार और वृद्धि
- सोशल मीडिया का प्रभाव
- तकनीकी प्रगति

इन बिदुओं पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ भारतीय फैशन उद्योगों में और अधिक वृद्धि होगी, हालांकि कुछ चुनौतियों भी है जिनके लिए रचनात्मक समाधानों की आवश्यकता है।

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था
भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था का मतलब कपडों के उत्पादन और खपत के पारंपरिक "Low Make Dispose" मॉडल से हटाकर उनके पुनः उपयोग, मरम्मत, रिसाइक्लिंग और पुनर्चक्रण पर ध्यान केन्द्रित करना है, जिससे कचरा कम हो और संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सके, जिसमें ब्रांड्स, टेक्नोलॉजी और सरकारी नीतियां महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, खासकर सेकेण्ड हैंड फैशन और अपसाइक्लिंग में वृद्धि हो रही है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था की मुख्य अवधारणा
- **कचरा कम करना:** कपड़ों को फेंकने के बजाय उन्हें फिर से इस्तेमाल करने या रिसाइकिलिंग करने के तरीके खोजना और नए तरीके से क्रियान्वित करना और पुनः इस्तेमाल में लाना।

- **संसाधनों का संरक्षणः** नए कच्चे माल की आवश्यकता को कम करना और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव घटाकर उन्हें संशोधित करें।

- **रिसाइकिलिंगः** पुराने कपड़ों से नए धागे और नया कपड़ा बनाना।

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था में अवसर
भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था में अवसरों से वस्त्र और परिधान निर्माण जैसे सतत् प्रक्रिया उद्योगों का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है, प्राकृतिक संसाधनों का विशाल भण्डार उपयोग करता है और विषैले अपशिष्ट, वाष्पशील कार्बनिक, यौगिक एवं गैसीय उत्सर्जन उत्पन्न करता है। इसलिए यह तर्क है कि फैशन उद्योगों में सर्कुलर इकोनॉमी को अपनाने के लिए प्रेरक कारकों और बाधाओं की गहन समझ विकसित करना

आवश्यक है क्योंकि ये कारक ही किसी भी फैशन उद्योग की चक्रीय अर्थव्यवस्था से संबंधित पहलों और अवसरों की समग्र दिशा निर्धारित करते हैं।

संसाधन संरक्षण एवं कचरा प्रबंधन

पुराने वस्त्रों और कपड़ों के कचरे को नया जीवन देकर, यह प्रणाली अपशिष्ट को कम करती है। और प्रत्येक कच्चे माल (जैसे– कपास) की आवश्यकता को घटाती है, जो भारत के विशाल कपास उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है।

- **नये बिजनेस मॉडलः** इसमें रिसाइकिलिंग और री–मैन्यूफैक्चरिंग के माध्यम से नए उत्पाद बनाना, मरम्मत सेवाएं देना और कपड़ों को फिर से बेचना शामिल है जिसमें राजस्व के नए स्रोत खुलते हैं।

- **ब्रांड वैल्यू और प्रति स्पर्धात्मकताः** भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण अपनाने से ब्रांड की छवि सुधरती है और कंपनियां भविष्य के टिकाऊ बाजारों के लिए तैयार होती है। जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

- **रोजगार सृजनः** यह उद्योग में नए फैशन कौशल जैसे कपड़ा पुनर्चक्रण और मरम्मत में कुशल श्रमिकों की मांग पैदा करती है जो 35 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार देने वाले इस क्षेत्र के लिए फायदेमंद है।

- **नवाचारः** ब्लॉकचेन जैसे तकनीकों का उपयोग करके आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता लाना और उत्पादों को ट्रैक करना, स्थिरता की गणना करने में मदद करता है।

- **टेक्नोलॉजी का उपयोगः** ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी जैसी तकनीकें कपड़ों के पूरे जीवनचक्र को ट्रैक करने और पारदर्शिता लाने में मदद कर रही है।

- **सेकेण्ड हैंड फैशनः** रिसेल और थ्रिफ्टिंग की संस्कृति बढ़ रही है। खासकर युवा पीढ़ी में जिससे कपड़ों का जीवन बढ़ रहा है। साथ ही कार्बन उत्सर्जन कम हो रहा है।

- **सरकारी नीतियांः** Make in India, PM Mitra Textile Park जैसी नीतियां पहले स्थिरता और विनिर्माण को बढावा दे रही है साथ ही PLI (Production Linked Incentive) स्कीम भी इस दिशा में मदद कर रही है।

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था अपनाने में चुनौतियों

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि इसे सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों में से एक माना जाता है। भारत जैसे विकासशील देशों को चक्रीय अर्थव्यवस्था अपनाने में कई बाधाओं का सामना करना पडता है। जैसे कि "नीतियों और विनिमयों का अभाव", "चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रथाओं के बारे में जागरूकता और ज्ञान का अभाव", "पुनर्चक्रित सामग्रियों और उत्पादों के लिए सीमित बाजार", "मिश्रित कपडों के लिए सीमित पुर्नचक्रण", के रूप में वर्गीकृत किया गया है। जो भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था को अपनाने में प्रमुख बाधाओं को प्रभावित करती है जो कि मुख्य चुनौतियां हैं –

- **बुनियादी ढांचें का अभावः** पर्याप्त वस्त्र संग्रह, छंटाई सुविधाओं और बडे पैमाने पर रिसाइक्लिंग इकाइयों की कमी।

- **सामग्री की जटिलताः** कपास पॉलिएस्टर जैसे मिश्रित कपड़ों को अलग करना मुश्किल है, जिससे रिसाइक्लिंग कठिन हो जाती है।

- **जागरूकता की कमीः** उपभोक्ताओं और व्यवसाओं के बीच चक्रीय फैशन और प्रभावी रिवर्स लॉजिस्टिक (अपशिष्ट वापसी प्रणाली) के बारे में सीमित समझ ।

- **नीति और नियामक अंतरालः** औद्योगिक वस्त्र रिसाइक्लिंग को बढ़ावा देने के लिए स्पष्ट नीतियों और प्रोत्साहनों की कमी।

- **डाउनसाइक्लिंगः** कई पुर्नचक्रित वस्त्र निम्न श्रेणी के उत्पादों में बदल जाते है, जिससे आर्थिक व्यवहार्यता घट जाती है और निवेश कम होता है।

- **फास्ट फैशन का प्रभावः** तेजी से बदलते रूझानों और कम लागत वाले उपभोग से कपडा कचरा खतरनाक स्तर तक बढ रहा है जिससे रिसाइक्लिंग पर दबाव बढ रहा है।

- **तकनीकी और प्रबंधकीय जटिलताएंः** वृत्ताकार डिजाइन, नई प्रणालियों और प्रौद्योगिकीयों को लागू करने के लिए विशेषज्ञता और संसाधनों का आवश्यकता ।

- **मानव संबंधी आयामः** संगठनात्मक व्यवहार और साफ्ट पहलुओं जैसे नेतृत्व और प्रबंधन प्रतिबद्धता पर कम ध्यान देना।

इन चुनौतियों के बावजूद भारत में कपडा कंपनियों टिकाऊ फैशन को बढावा देने के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रथाओं को लागू कर रही है लेकिन व्यापक परिवर्तन के लिए प्रणालीगत सहयोग और लक्षित रणनीतियों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारतीय फैशन उद्योग चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ रहा है, जो पर्यावरणीय और आर्थिक दोनों दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। चुनौतियों के बावजूद प्रौद्योगिकी, नीतिगत समर्थन और उपभोक्ता जागरूकता के माध्यम से इस बाधाओं को दूर किया जा सकता है। '6R' (Reduce, Reuse, Recycle , Rethink, Repair, Regenerate) जैसे सिद्धांतों को अपनाना, उन्नत तकनीकों में निवेश करना और उपभोक्ताओं को शिक्षित करना, भारत को प्रतिस्पर्धा, टिकाऊ और चक्रीय फैशन उद्योग बनाने की कुंजी है, जो आर्थिक विकास के साथ साथ हमारे पृथ्वी के लिए भी बेहतर है।

भारतीय फैशन उद्योग के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण बदलाव है अवसरों का लाभ उठाने और चुनौतियों से पार पाने के लिए सरकार, उद्योग और उपभोक्ताओं को मिलकर काम करना होगा। रणनीति में तकनीकी उन्नयन जागरूकता अभियान मजबूत नीतिगत समर्थन जैसे ई पी आर को अनिवार्य करना और नवाचार जैसे टिकाऊ डिजाइन शामिल होने चाहिए। इससे भारत फैशन उद्योग एक मजबूत , प्रतिस्पर्धा और टिकाऊ फैशन उद्योग के रूप में उभर सकता है बल्कि वैश्विक फैशन बाजार में भी अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बढाई जा सकती है।

अध्ययन का उद्देश्य

- भारतीय फैशन उद्योग का अध्ययन।
- भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन।

- भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था में प्रदत्त अवसरों का अध्ययन।

भारतीय फैशन उद्योग में चक्रीय अर्थव्यवस्था अपनाने में चुनौतियों का अध्ययन। आदि।

शोध पद्धति

वर्तमान शोध आलेख सामग्री विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसके लिए द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकें और लेखों इत्यादि से सामग्री प्राप्त की गयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Nift.ac.in NIFT Journal of Fashion (2023) On Circular Economy.
2. Medveten Konsumtion (2022) On Circular Economy in Fashion
3. JETIR (2024) On circular economy and sustainable practices in the fashion industry.
4. WILEY online library (Drivers and Barriers for circular economy transition in the taxtile industry.
5. एलन मैकआर्थर फाउंडेशन (फैशन के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था)
6. Raceias.com (भारतीय कपड़ा उद्योग)
7. Sanskriti IAS (भारत का परिधान निर्यात संकट)
8. Research Gate (वस्त्र और फैशन में चक्रीय अर्थव्यवस्था)
9. Springer (2021) फैशन की सतत चक्रीयता के लिए लचीले निर्णय
10. Dheyeya IAS (2025) भारत का वस्त्र उद्योगः विकास, चुनौतियां और आगे की राह।
11. NCERT गृहविज्ञान (2023) फैशन डिजाइन और व्यापार